उपसंहार

उपसंहार

गिरिराज किशोर का व्यक्तित्व और कृतित्व

किशोर जी का बचपन और यौवन समस्याओं के साथ बीत गया । शिक्षा के दौरान् उनकी बुआजाद बहन सत्या गुप्ता ने उन्हें काफी सहयोग दिया । उन्होंने आर्थिक विवंचना और साहित्य-सृजन, इनदोनों को भी बहुत अच्छे ढंग से संभाल लिया । जीवन के विभिन्न अनुभवों के बीच उनके साहित्य की धारा प्रवाहमान हुई । कोई भी उतार-चढ़ाव , कोई बाधा इस प्रवाह को नहीं रोक सकी । किशोर जी जिंदगी में आदर्शवादी हैं और लेखन में यथार्थवादी हैं । अपने साहित्य में वे यथार्थ सामाजिक स्थिति एवं गहराई लाने में पूर्णत सफल हुए हैं । उनके साहित्य में कल्पनिकता एवं झूठी रचनात्मकता का अभाव है ।

किशोर जी के साहित्य में समकालीन यथार्थ समस्याओं का चित्रण मिलता है । वे नाटक, एकांकी, कहानी, उपन्यास, आलोचना, बाल-साहित्य आदि क्षेत्रों में मौलिक साहित्य की सृष्टि कर रहे हैं । उनके साहित्य में प्राप्त हृदय की अपेक्षा मस्तिष्क का चिंतन वर्तमान है । वास्तविकता यह है कि उनके नाटक, कहानियाँ, उपन्यास आदि सभी में मानवीयता का प्रमुख स्वर सुनाई देता है । सब से महत्त्वपूर्ण बात ये है कि उनका साहित्य देश की सीमाओं में बँधा हुआ न होकर सार्वदेशिक है । यही कारण है कि उनका अधिकांश साहित्य दूसरी भाषाओं में भी अनूदित हुआ है । किशोर जी का साहित्य सृजन निरंतर जारी है । गिरिराज किशोर आधुनिक हिन्दी साहित्य के श्रेष्ठ साहित्यकार माने जा सकते हैं ।

विवेच्य नाटकों का वस्तु-शिल्प

गिरिराज किशोर के नाटकों के कथानक समकालीन जीवन पर केन्द्रित हैं । सामाजिक एवं राजनैतिक नाटकों में विशेष रूप से विविध सामाजिक कुरीतियों की भयंकरता और उद्‌बोधन की प्रवृत्ति प्रमुख रही है ।इनके नाटक विशेषतः सामाजिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं । इनके नाटकों में वातावरण निर्मिति की कला अनूठी है। सुगठित दृश्य-विधान, मनोवैज्ञानिक एवं सजीव चरित्र-सृष्टि, सशक्त शैली, नाटकीय परिस्थितियों की सुन्दर योजना-ये विशेषताएँ किशोर जी के नाटकों के वस्तु-शिल्प

SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

अर्थात् कथानक में दिखाई देती हैं । भाव और घटि हुई परिस्थितियों का घात-प्रतिघात प्रदर्शित करने में किशोर जी कुशल हैं । विषय वस्तुओं में नारी पात्रों की अंतर्वेदना भी स्पष्ट दिखाई देती है । कथानक में पात्रों को अनेक परिस्थितियों में डालकर उनकी आन्तरिक वृत्तियों का चित्रण बड़ी मार्मिकता से किया है । कल्पना का कुशल संगठन, मौलिक दृश्य योजना, यथार्थ एवं मनोवैज्ञानिक चरित्र-सृष्टि तथा दुख की भावना का चित्रण किशोर जी के नाटकों के वस्तु-शिल्प में दिखाई देते हैं । अतः कुछ जटिलताओं के होते हुए भी इनके नाटकों का विशेष महत्त्व है । इनकी कृतियों में नवीनता , कलात्मकता और मौलिकता के दर्शन होते हैं ।इनके नाटकों के कथानकों में इतिहास , धर्म, राष्ट्रीयता संस्कृति , राजनीति , समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान एवं नाट्यकला की विभिन्न धाराओं का समन्वय हुआ है । इनकी कृतियाँ वस्तु-शिल्प की दृष्टि से सफल कृतियाँ हैं ।

विवेच्य नाटकों का चरित्र-शिल्प

किशोर जी के नाटकों के सभी चरित्र वर्तमान समाज के प्रतिनिधि पात्र हैं । कुछ पात्रों को मानवीय भूमि पर उतारने का प्रयास किया है, उससे इनके चरित्र-चित्रण में स्वाभाविकता एवं यथार्थता की साधारण रूपरेखा भी अत्यंत स्पष्ट एवं सजीव रूप से इनकी वर्गगत विशेषताओं का भान करवा देती है । पात्रों में भी यथाशक्ति सजीवता लानेका प्रयास किया गया है । सभी नाटकों में नाटककार की यथार्थवादी दृष्टि स्पष्टतया परिलक्षित हो जाती है । इन पात्रों का चयन वास्तविक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से किया गया है । कुछ वर्गों और विभिन्न पेशे के लोगों को उनकी विशेषताओं एवं विकृतियों के साथ अत्यंत स्पष्ट एवं सजीव ढंग से प्रस्तुत करना प्रशंसनीय कदम ही कहा जाएगा । चरित्र-प्रकाशन में पत्र, स्वगत-कथन तथा कथोपकथन आदि काफी सहायक सिद्ध हुए हैं । इनके नाटकों के विषय की परिधि विस्तृत होने के कारण पात्रों का चयन भी पुराण, इतिहास और विशेषतः आज के समाज के विस्तृत क्षेत्र से हुआ है । इन नाटकों में भिन्न-भिन्न श्रेणियों के पात्रों को स्थान मिला है । किशोर जी के नाटकों का महत्त्व कथानकता की अनेक रूपता के कारण नहीं, अपितु विभिन्न चरित्रों के चित्रण के कारण है जो उनके नाटकों में अत्यंत कुशलता एवं स्वाभाविकता से अंकित है । इन नाटकों में चरित्रगत वैविध्य पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है । मानव जीवन की सहज अनुभूतियों का यथावत् एवं सूक्ष्म चित्रण, पूर्ण वैचित्र्य के साथ अत्यंत कलात्मक ढंग से हुआ है । नायक के चरित्रों में उत्कर्ष स्थापना हेतु एवं वस्तु में नाटकीयता लाने के लिए प्रतिनायक पात्रों का भी विधान किया गया है । इन प्रतिद्वंन्द्वी पात्रों के चित्रण में नाटककार की विशेष कुशलता के दर्शन सहजतया हो जाते हैं ।निष्कर्ष यह कि चरित्र-शिल्प की दृष्टि से विवेच्य नाटक श्रेष्ठ कोटि के परिलक्षित होते हैं ।

विवेच्य नाटकों का संवाद–शिल्प

गिरिराज किशोर जी के नाटकों के संवादों में स्वाभाविकता एवं नाटकीयता का गुण होने के साथ कार्य को गति प्रदान करने की शक्ति भी है । पात्रों के स्वभाव, उनकी शिक्षा–दीक्षा एवं स्थिति के अनुकूल ही संवादों की निर्मिति हुई है । इन संवादों में चरित्रगत विशेषताओं को स्पष्ट करने और कथा को अभीष्ट की ओर मोड़ने की शक्ति है ।साथ ही वातावरण में स्वाभाविकता उत्पन्न करने तथा रस का स्रोत बहाने की सामर्थ्य है । इन नाटकों के संवादों में विदग्धता , सजीवता एवं नाटकीय प्रवाह भी यथेष्ट मात्रा में मिलता है । यही कारण है कि इन्हीं सरस एवं आकर्षक संवादों का अद्‌भुत प्रभाव सामाजिकों पर पड़ता है और नाटक में आद्‌यन्त रंगमंचीय आकर्षण बना रहता है। किशोर जी के अधिकांश संवाद कथावस्तु को सशृंखल और गतिशील एवं पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को उद्‌घाटित करने में अत्यंत सफल सिद्‌ध होते हैं । कई स्थलों पर ये संवाद परिस्थितियों के अनुसार भावात्मक , आवेशात्मक, मनोवैज्ञानिक तथा कहीं–कही अलंकारिक तथा व्यंग्यात्मक भी बन गये हैं । ये संवाद दृश्य–विधान, वातावरण सूचक तथा विचार प्रकाशक आदि प्रकार के हैं ।किशोर जी का यथार्थवादी दृष्टिकोण संवादों के माध्यम से ही व्यक्त हुआ है । नाटककार ने संवादों में वास्तविकता लाने का सफल प्रयत्न किया है । ये संवाद हमारे जीवन के निकट हैं । इनमें सादगी, साहित्यिकता,स्वाभाविकता एवं नाटकीयता आदि तत्त्व हैं । किशोर जी की यथार्थवादिता और गतिशीलता के कारण ये संवाद दर्शकों को प्रभावित करते हैं । तात्पर्य यह कि संवाद–शिल्प की दृष्टि से विवेच्य नाटक अतिरिक्त सफल बन पड़े हैं ।

विवेच्य नाटकों का अभिनय–शिल्प

किशोर जी के नाटकों पर दृष्टिपात करने से यह स्पष्टतया ज्ञात होता है कि ये नाटक अभिनीत होने के लिए ही लिखे गये हैं । रंगमंच का अनिवार्य तत्त्व है दृश्य–विधान जो विवेच्य नाटकों में प्रायः सरल ही बन पड़ा है । इन नाटकों में दृश्य–योजना के अतिरिक्त अधिकांश रचनाएँ नाट्यकला की दृष्टि से उत्तम बन पड़ी हैं । इनकी आधारभूमि दृढ़ एवं संयत् है । नाटककारने अपनी ओर से प्रत्येक अंक के पूर्व रंगसज्जा के विस्तृत विवरण दिए हैं जिनमें रंगसज्जा,पात्रों का रूपरंग , वेशभूषा, पात्रों की भावभंगिमा तथा प्रवेश - प्रस्थान आदि का वर्णन किया है । किशोर जी के नाटकों को यही विशेषताएँ अभिनयोपयुक्त बना देती हैं । किशोर जी की रचनाओं में अधिकांश कृतियाँ अभिनेय

हैं । इन्होंने अपनी नाट्य–कृतियों को रंगमंचोपयोगी बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया है । उनकी रचनाओं में रंगमंच के अनुकूल कई विशेषताएँ प्राप्त होती हैं । अधिकांश नाटकों का दृश्य–विधान काफी सरल, सीधा–सादा और नाटकोचित है । अधिकांश रचनाओं में उनकी प्रौढ़स्तर अभिनय क्षमता के दर्शन होते हैं । इनमें रसानुभूति एवं प्रभावोत्पादकता प्रचुर मात्रा में है । अधिकांश कृतियों में कार्य–व्यापार, कुतुहलता तथा आकस्मिकता आदि तत्त्वों की प्रचुरता है । इस प्रकार साहित्यिक उत्कृष्टता के साथ–साथ अभिनेयता इनके नाटकों का आवश्यक गुण है ।

विवेच्य नाटकों में रंगमंच–शिल्प

गिरिराज किशोर जी ने नाटक लिखने की विधि के साथ रंगमंच संबंधी विधि का भी अपेक्षित ध्यान रखा है । उनकी रंगमंच संबंधी बातों में नाटकीय निर्देश हैं । उन्होंने अपने सभी नाटक इस दृष्टि से लिखे हैं कि रचना का आंतरिक सौन्दर्य रंगमंच पर विस्तारित हो और उसकी प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति संभव हो । विवेच्य नाटकों में प्राप्त उनकी यह दृष्टि काफी महत्त्वपूर्ण है । किशोर जी के नाटक मंचीय हैं और इनमें रंगशिल्पके सभी तत्त्व विद्यमान हैं । रंगदृष्टि से " प्रजा ही रहने दो " उच्च कोटि का नाटक है । उन्होंने अपने नाटकों में रंगमंच विधान तथा व्यवस्था इत्यादि के सूक्ष्मातिसूक्ष्म निर्देश किये हैं । उन्होंने नाटक लिखने की विधि के साथ रंगमंच संबंधी विधि का भी ख्याल रखा है । उनकी रंगमंच संबंधी बातों में नाटकीय निर्देश हैं ।

रंगमंचीय प्रयोगों की जो विविधता, अंतरंग पहचान, रंगमंच के मुहावरे की तलाश और पहचान आदि इन नाटकों में सर्वत्र दिखाई देती हैं, वह अत्यंत सराहनीय है । ज्यादातर नाटकों में उन्होंने रंगमंचीय आकर्षण पैदा करने की कोशिश की है । नाटक के अनुसार नाटक का रंगमंच भी अनुकूल है । उन्होंने नाटक के माध्यम से रंगमंच की निर्मिति का प्रयास किया है । बने–बनाये रंगमंच का ढाँचा उन्होंने स्वीकार नहीं किया , पर उसका श्रृंगार अपने ढंग से किया है । रंगमंचीयता की व्यावहारिक दृष्टि को सामने रखकर उन्होंने अपने नाटकों का सृजन किया है । तात्पर्य यह कि मंचीय शिल्पकी दृष्टि से विवेच्य नाटक काफी सफल हैं ।

विवेच्य नाटकों में उद्देश्य–शिल्प

किशोर जी के नाट्य–सृजन के मूल में पारिवारिक, सामाजिक एवं राजनीतिक उद्देश्य निहित

हैं । उन्होंने समकालीन विभिन्न परिस्थितियाँ देखकर ही अपने नाटकों का सृजन किया है । किशोर जी की सभी रचनाएँ विभिन्न और निश्चित उद्देश्यों को लेकर लिखी गई हैं । नाटककार ने इन नाटकों में प्रमुख समस्याओं के साथ ही प्रसंगवश अन्य कई समकालीन सामाजिक विकृतियों के संबंध में उचित संकेत देने के साथ व्यंग्य भी किए हैं । किशोर जी के नाटकों में हमारे जीवन की यथार्थ, स्वाभाविक एवं प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति होने के कारण और इनसे हमारा तादात्म्य स्थापित होने से रसात्मकता का निर्माण तो सहज ही हो जाता है । स्पष्ट है कि सामाजिक स्वतंत्रता किशोर जी के नाटकों का प्रमुख ध्येय है । नाटककार समाज को उन सामाजिक और नैतिक विषमताओं से मुक्त करना चाहता है जो जीवन के स्वाभाविक प्रवाह को आज भी जटिल, जर्जर एवं अवरूद्ध बनाए हुए हैं । नाटककार ने राजनीतिक समस्याओं के साथ समाज की अनेक समस्याओं को बड़ी स्वाभाविक, प्रभावपूर्ण एवं सुन्दर शैली में दिखाया है । संक्षेप में गिरिराज जी लक्ष्य की अभिव्यक्ति में पूर्णतया सफल रहे हैं । इन नाटकों में किशोर जी का दृष्टिकोण यथार्थवादी है । उनका लक्ष्य समाज की विभिन्न विकृतियों व असंगत रूढ़ियों को अभिव्यक्त करना है और उन पर चोट कर समाज को वास्तविकता के प्रत्यक्ष रूप का अनुभव करवाकर उन्हें प्रगति की ओर ले जाना है । इसी उद्देश्य को हम स्पष्ट रूप से उनके प्रायः सभी नाटकों में ढूँढ़ सकते हैं । नाटककार ने मध्यवर्गीय और पीड़ित समाज की यथार्थ परिस्थितियों का विश्लेषण किया है जिससे इन नाटकों की सोद्देश्यता स्पष्ट हो जाती है । इनमें हमारी सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ परिस्थितियों का विश्लेषण और सामाजिक विकृतियों का उद्घाटन हुआ है ।

विवेच्य नाटकों में भाषा–शिल्प

किशोर जी के सभी नाटकों में पात्रानुकूल भाषा–प्रयोग के स्थल बहुलता से प्राप्त होते हैं । इनमें लक्षणा और व्यंजना शक्ति का खुलकर प्रयोग हुआ है । इन्होंने अपनी भाषा को यथास्थान सरल, सरस, सजीव एवं प्रवाहमयी बनाने का प्रयास किया है । उनकी भाषा की सामान्य विशेषताएँ–जिंदादिली, स्वाभाविकता तथा व्यंग्यात्मकता है । साथ ही इसमें कलात्मकता , सजीवता एवं प्रवाह है । शब्द–चयन और वाक्य–विन्यास श्रेष्ठ है । यही कारण है कि इनके नाटकों के सभी पात्र चाहे देशी हो या विदेशी, स्त्री हो या पुरूष, सेवक हो या स्वामी, नागरीक हो या ग्रामीण , शिक्षित हो या अशिक्षित वे शुद्ध साहित्यिक हिन्दी का प्रयोग करते हैं । उनके नाटकों की भाषा सामान्य रूप से प्रायः सरस, सरल, सुबोध, स्वाभाविक, चुस्त एवं ओजपूर्ण है । इनके नाटकों में लाक्षणिकता,

ध्वन्यात्मकता अथवा चांचल्य की अपेक्षा भाषा की स्वाभाविकता, स्पष्टता , यथार्थता एवं स्थिरता पर्याप्त मात्रा में है ।

किशोर जी के नाटकों की भाषा अत्यंत स्वाभाविक , प्रवाहमयी एवं प्रभावोत्पादक है । भाषा–शिल्प में भावोचित शब्द–निर्माण एवं शब्द–चयन में नाटककार काफी सफल रहा है । विवेच्य नाटकों में भाषा का प्रयोग प्रायः पात्रों के अनुकूल , विषयानुकूल एवं परिस्थिति के अनुकूल हुआ है । किशोर जी की भाषा में सरसता, सरलता एवं चित्रात्मकता देखने को मिलती है ।सभी प्रयोगों में भाषा–शैली अत्यंत सुगठित , धाराप्रवाहिक एवं मर्म को स्पर्श करने की अपूर्व क्षमता रखती है । उसमें शब्द की तीनों शक्तियों के गुणों–ओज , माधुर्य एवं प्रसाद की प्रतिष्ठा अनुपम ढंग से हुई है । इस प्रकार भाषा–शिल्प की दृष्टि से किशोर जी की नाट्य–कृतियाँ उच्च कोटि की हैं ।

किशोर जी के नाटक समकालीन युग का स्वर है। साथ ही जीवन का ठोस धरातल है । इनमें प्रायः चार प्रमुख धाराओं –सामाजिक, पौराणिक , राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक नाटक प्राप्त होती हैं । इन नाटकों का साहित्यिक स्तर काफी उन्नत है । इन नाटकों में प्रौढ़ता एवं स्थायित्व का तत्व विद्यमान है । वातावरण का निर्माण किशोर जी की नाट्य–कला की मौलिक विशेषता है । नाटकीय परिस्थितियों की सुन्दर योजना, मनोहर दृश्य–विधान, कथोपकथन , मनोवैज्ञानिक एवं स्वाभाविक चरित्र–सृष्टि, अलंकृत शैली आदि के योग द्वारा किशोर जी ने मौलिक सृष्टि का निर्माण किया है । इनके नाटकों के पात्र जागृत , जीवित, स्पंदित एवं विकासोन्मुखी हैं । किशोर जी भावों का उद्घाटन करने में अत्यंत कुशल हैं । इन नाटकों में वीर, श्रृंगार, शांत तथा करूण रस की एवं अंतर्वेदना की भव्य झाँकी प्रस्तुत की गई है । कथोपकथनों में उपयुक्तता का तत्त्व दिखाई देता है । जिज्ञासा , नाटकीयता, गतिशीलता तथा प्रभावात्मकता आदि सभी दृष्टियों से किशोर जी के नाटक सफल हुए हैं ।

दृश्य–योजना के अतिरिक्त अधिकांश रचनाएँ नाट्य–कला की दृष्टि से उत्तम बन पड़ीहैं । इनकी आधार–भूमि दृढ़ एवं संयत् है । घटना, योजना तथा पात्र–योजना स्वाभाविक एवं मनोवैज्ञानिक बन पड़ी है। अधिकांश कृतियों में कार्य–व्यापार , कौतुहल और जिज्ञासा आदि तत्व यथेष्ट मात्रा में मिलते हैं इनमें भौतिक संघर्ष के साथ मानसिक एवं बौद्धिक संघर्ष की अच्छी प्रतिष्ठा हुई है । इनके नाटकों का आधारभूत तत्त्व संवाद अत्यधिक सशक्त, प्रभावोत्पादक एवं कलात्मक बन पड़ा है । इस प्रकार

इन नाटकों में अधिकांश शिल्पगत तत्त्वों की प्रतिष्ठा परम सफलता से हुई है । अनेक घटनाओं के सृजन एवं पात्रों के चरित्रांकन में नाटककार की मौलिकता की छाप स्पष्ट परिलक्षित हो जाती है । इन नाटकों में नाटककार की उत्तम कलात्मकता, नाट्य–कला का प्रौढ़ एवं परिपक्व रूप दिखाई देता है । इन रचनाओं में स्वाभाविकता, यथार्थता एवं मनोवैज्ञानिकता को महत्त्वपूर्ण स्थान मिला है । यही किशोर जी की महत्त्वपूर्ण मौलिक देन है ।

"प्रजा ही रहने दो" नाटक की विशिष्टता सर्वोपरि है । भाषा और संवाद के अभिनव प्रयोग, नाटकों में वातावरण निर्मिति , पात्रों की मनःस्थिति और प्रभावान्विति की दृष्टि से कई प्रयोग हैं । नाटकों के दृश्यबंध नव्य नाट्य–शिल्प की विशिष्ट देन हैं । रंगमंचऔर अभिनयता की दृष्टि से उनके नाटक बेजोड़ हैं । प्रकाश--योजना ,ध्वनि एवं संगीत की नियोजना सार्थक है । परंपरा और आधुनिकता के संदर्भ में किशोर जी के नाटक स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में अपना विशिष्ट महत्त्व रखते हैं । उनकी प्रयोग धर्मिता उनके नाटकों में कथ्य और शिल्प दोनों में है । इतिहास को केवल आधार के रूप में ग्रहण कर आधुनिक जीवन संदर्भ को आंकने का नाटककार का प्रयास स्तुत्य है । किशोर जी सच्चे अर्थों में आधुनिक भारतीय नाटककार हैं ।

निष्कर्ष यह है कि किशोर जी वर्तमान श्रेष्ठ नाटककारों में से एक हैं । इनकी सफलता और उत्तमता इसमें है कि इनके कथानक जीवन से लिये हुए एवं रोचक हैं । भावों का धरातल उँचा, कथोपकथन स्वाभाविक तथा चरित्र–चित्रण विशुद्ध है । स्पष्टता, अत्यधिक स्वाभाविकता एवं विश्लेषण की सुबोधता इनके नाटकों का प्रमुख गुण है । इनकी कृतियाँ नाटकीय कला–कौशल के उत्कृष्ट नमूने हैं । इनमें रंगमंच एवं शिल्प के विभिन्न तत्त्वों का कलात्मक और वैज्ञानिक समन्वय मिलता है । हिन्दी नाटक में राकेश के बाद किशोर जी ऐसे नाटककार हैं जिन्होंने प्रौढ़ नाट्य–रचनाओं का सृजन किया है । उनका नाट्य शिल्प निश्चय है । नाटक के चरम विकास को घोषित करता है । अतः गिरिराज किशोर जी आधुनिक हिन्दी नाट्य–साहित्य के उत्कृष्ट कलाकार हैं ।

उपलब्धियाँ

इस लघु शोध--प्रबंध की मुख्य उपलब्धियाँ ये हैं --

गिरिराज किशोर आठवें तथा नवें दशक के एक सशक्त हिन्दी नाटककार हैं। लेकिन उचित समीक्षा के अभाव में वे उपेक्षित–से रहे हैं । प्रस्तुत लघु शोध–प्रबंध में गिरिराज किशोर के व्यक्तित्व और कृतित्व पर यथोचित प्रकाश डाल कर इस अभाव की पूर्ति का प्रयास किया है ।

2 गिरिराज किशोर के नाटकों के मुख्य विषय सामाजिक और राजनीतिक यथार्थ पर आधारित हैं जिसे व्यक्त करने में वे सफल हुए हैं । प्रस्तुत लघु शोध–प्रबन्ध में इस पर पर्याप्त प्रकाश डाला है ।

3 किशोर जी ने नाटक लिखने की विधि के साथ रंगमंच संबंधी विधि की ओर भी अपेक्षित ध्यान रखा है। रंगमंच संबंधी बातों पर प्रस्तुत शोध कार्य में यथोचित् विवेचन किया है ।

4 साहित्यिक उत्कृष्टता के साथ–साथ अभिनेयता इनके नाटकों का महत्त्वपूर्ण गुण है । किशोर जी के नाटक अभिनय की विशेषताओं से पुष्ट हैं और इस दृष्टि से भी इस लघु शोध–प्रबंध में विवेचन किया है ।

5 गिरिराज किशोर के नाटकों का नाट्य–शिल्प की दृष्टि से इस लघु शोध–प्रबन्ध में प्रथम बार सूक्ष्मता से विवेचन प्रस्तुत है ।

अध्ययन की नई दिशाएँ

गिरिराज किशोर जी के साहित्य पर स्वतंत्र रूप से निम्न लिखित विषयों पर अनुसंधान किया जा सकता है --

1 गिरिराज किशोर के नाटकों का मंचीयता का अनुशीलन ।

2 गिरिराज किशोर के नाटकों में अभिनय–शिल्प ।

3 गिरिराज किशोर के नाटकों का कथ्य ।

4 समकालीन जीवन के परिप्रेक्ष्य में गिरिराज किशोर के समग्र साहित्य का अनुशीलन ।

5 गिरिराज किशोर के नाटकों में आधुनिक जीवनबोध ।